

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	हितिक	हितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्ध	सद्गन्ध	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़स	सज़स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्र	उज़्र	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्की	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रन	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अधुव	अधुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काँफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाया	करणाया	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्ज़त	इज़्ज़त	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्वां	ध्वां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कटू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्पवास	उत्पवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	ल्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में
मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के लिए
ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिप-कार्ड पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिप-कार्ड पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ड पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ड पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ड पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ड पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह धुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह धुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

pg 7/18

पपरुपववरुवव
पपरूपववरुवव
पपदुपववदुवव
पपदूपववदुवव
पपदृपववदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप
पपपॅपपरॅपपकॅपप
पपपँपपरँपपकँपप
पपपैंपपरैंपपकैंपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपापपरापपकापप
पपपापपरापपकापप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप

पपपौपपरौपपकौपप
पपपौपपरौपपकौपप
पपपौपपरौपपकौपप

पपपुपपरुपपकुपप
पपपूपपरुपपकूपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप
पपपृपपरुपपकृपप

पपपंपपरंपपकंपप
पपपॅपपरॅपपकॅपप
पपपँपपरँपपकँपप
पपपैंपपरैंपपकैंपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकैपप

पपपऽपवपवऽवव
पप?पवपव?वव
पपपःपवपवःवव

Numeral spacing

००००१०१०११
००१०१०११११
००२०१०१२११
००३०१०१३११
००४०१०१४११
००५०१०१५११
००६०१०१६११
००७०१०१७११
००८०१०१८११
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.
पपन, पवन.
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक्र, पवक्र.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपज, पवज.
पपङ, पवङ.
पपढ, पवढ.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
पपओ, पवओ.
पपऑ, पवऑ.
पपइ, पवइ.
पपई, पवई.
पपउ, पवउ.
पपऊ, पवऊ.
पपए, पवए.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.

पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपऋ, पवऋ.
पपऌ, पवऌ.
पपलृ, पवलृ.
पपलृ, पवलृ.

पपङ्, पवङ्.
पपछ्, पवछ्.
पपट्, पवट्.
पपट्, पवट्.
पपङ्, पवङ्.
पपढ्, पवढ्.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपर्, पवर.
पपह्, पवह्.
पपळ्, पवळ्.

पपक्त, पवक्त.
पपरु, पवरु.
पपरु, पवरु.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.

पपद्, पवद्.
पपष्ट, पवष्ट.
पपम्भ, पवम्भ.
पपष्ठ, पवष्ठ.
पपल्ज, पवलज.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.
पपल्ल, पवल्ल.

पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपरु, पवरु.
पपरु, पवरु.
पपदु, पवदु.
पपदू, पवदू.
पपदृ, पवदृ.

-
पपक; पवक:
पपख; पवख:
पपग; पवग:
पपघ; पवघ:
पपङ; पवङ:
पपच; पवच:
पपछ; पवछ:
पपज; पवज:
पपझ; पवझ:
पपञ; पवञ:
पपट; पवट:
पपठ; पवठ:

पपड; पवडः	पपअँ; पवअँः	पपडू; पवडूः	पपघ। पवघः	पपड़। पवड़ः	पपह। पवहः	पपरू। पवरूः
पपढ; पवढः	पपइ; पवइः	पपडू; पवडूः	पपङ। पवङः	पपढ़। पवढ़ः	पपळ। पवळः	पपटु। पवटुः
पपण; पवणः	पपई; पवईः	पपडू; पवडूः	पपच। पवचः	पपफ़। पवफ़ः		पपटू। पवटूः
पपत; पवतः	पपउ; पवउः	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछः	पपय। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपट्ट। पवट्टः
पपथ; पवथः	पपऊ; पवऊः	पपद्ग; पवद्गः	पपज। पवजः	पपक्ष। पवक्षः	पपरु। पवरुः	
पपद; पवदः	पपए; पवएः	पपद्ध; पवद्धः	पपझ। पवझः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपरू। पवरूः	-
पपध; पवधः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपञ। पवञः		पपट्ट। पवट्टः	पपक! पवक?
पपन; पवनः	पपऐँ; पवऐँः	पपद्ध; पवद्धः	पपट। पवटः	पपअ। पवअः	पपट्ट। पवट्टः	पपख! पवख?
पपप; पवपः	पपऐँ; पवऐँः	पपद्ध; पवद्धः	पपठ। पवठः	पपअँ। पवअँः	पपट्ट। पवट्टः	पपग! पवग?
पपफ; पवफः	पपआ; पवआः	पपद्द; पवद्दः	पपड। पवडः	पपई। पवईः	पपडू। पवडूः	पपघ। पवघ?
पपब; पवबः	पपओ; पवओः	पपष्ट; पवष्टः	पपढ। पवढः	पपइ। पवइः	पपडू। पवडूः	पपङ। पवङ?
पपभ; पवभः	पपऔ; पवऔः	पपम्भ; पवम्भः	पपण। पवणः	पपई। पवईः	पपडू। पवडूः	पपच। पवच?
पपम; पवमः	पपऋ; पवऋः	पपष्ठ; पवष्ठः	पपत। पवतः	पपउ। पवउः	पपद्ध। पवद्धः	पपछ। पवछ?
पपय; पवयः	पपऋ; पवऋः	पपल्लज; पवल्लजः	पपथ। पवथः	पपऊ। पवऊः	पपद्ग। पवद्गः	पपज। पवज?
पपर; पवरः	पपलृ; पवलृः	पपल्ल; पवल्लः	पपद। पवदः	पपए। पवएः	पपद्ध। पवद्धः	पपझ। पवझ?
पपल; पवलः	पपलृ; पवलृः	पपल्ल; पवल्लः	पपध। पवधः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध। पवद्धः	पपञ। पवञ?
पपळ; पवळः		पपल्ल; पवल्लः	पपन। पवनः	पपऐँ। पवऐँः	पपद्ध। पवद्धः	पपट। पवट?
पपव; पववः		पपल्ल; पवल्लः	पपप। पवपः	पपऐँ। पवऐँः	पपद्ध। पवद्धः	पपठ। पवठ?
पपश; पवशः	पपइ; पवइः		पपफ। पवफः	पपआ। पवआः	पपद्द। पवद्दः	पपड। पवड?
पपष; पवषः	पपछ; पवछः	पपहु; पवहुः	पपब। पवबः	पपओ। पवओः	पपष्ट। पवष्टः	पपढ। पवढ?
पपस; पवसः	पपट्र; पवट्रः	पपहू; पवहूः	पपभ। पवभः	पपऔ। पवऔः	पपम्भ। पवम्भः	पपण। पवण?
पपह; पवहः	पपट्र; पवट्रः	पपहू; पवहूः	पपम। पवमः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत। पवत?
पपक्र; पवक्रः	पपइ; पवइः	पपहू; पवहूः	पपम। पवमः	पपऋ। पवऋः	पपल्लज। पवल्लजः	पपथ। पवथ?
पपख; पवखः	पपद्द; पवद्दः	पपहु; पवहुः	पपय। पवयः	पपलृ। पवलृः	पपल्ल। पवल्लः	पपद। पवद?
पपग। पवगः	पपद्ग; पवद्गः	पपहू; पवहूः	पपर। पवरः	पपलृ। पवलृः	पपल्ल। पवल्लः	पपध। पवध?
पपज; पवजः	पपरू; पवरूः	पपहू; पवहूः	पपल। पवलः		पपल्ल। पवल्लः	पपन। पवन?
पपड़; पवड़ः	पपहू; पवहूः	पपरू; पवरूः	पपळ। पवळः	पपइ। पवइः	पपल्ल। पवल्लः	पपप। पवप?
पपढ; पवढः	पपळ; पवळः	पपडू; पवडूः	पपव। पववः	पपछ। पवछः	पपल्ल। पवल्लः	पपफ। पवफ?
पपफ़; पवफ़ः		पपट्ट; पवट्टः	पपश। पवशः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः	पपब। पवब?
पपय; पवयः	पपक्त; पवक्तः	पपट्ट; पवट्टः	पपष। पवषः	पपद्र। पवद्रः	पपहू। पवहूः	पपभ। पवभ?
पपक्ष; पवक्षः	पपरु; पवरुः	पपट्ट; पवट्टः	पपस। पवसः	पपट्र। पवट्रः	पपहू। पवहूः	पपम। पवम?
पपज्ञ; पवज्ञः	पपरू; पवरूः	-	पपह। पवहः	पपइ। पवइः	पपहू। पवहूः	पपय। पवय?
	पपट्ट; पवट्टः	पपक। पवकः	पपक्र। पवक्रः	पपद्र। पवद्रः	पपहु। पवहुः	पपर। पवर?
पपअ; पवअः	पपट्ट; पवट्टः	पपख। पवखः	पपख। पवखः	पपद्र। पवद्रः	पपहू। पवहूः	पपल। पवल?
पपअँ; पवअँः	पपट्ट; पवट्टः	पपग। पवगः	पपज। पवजः	पपरू। पवरूः	पपरु। पवरुः	पपळ। पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्ग! पवङ्ग?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्-दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ! पवछ?		पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहु! पवहु?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपभ-भपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपट्र! पवट्र?	पपह! पवह?	पपम-मपव	पपक्र-क्रपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपह! पवह?	पपय-यपव	पपक्र-क्रपव	पपल्ज-ल्जपव	"थपवपथ"
पपक्र! पवक्र?	पपद्ग! पवद्ग?	पपहु! पवहु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपल्ल-ल्लपव	"दपवपद"
पपख! पवख?	पपट्र! पवट्र?	पपहु! पवहु?	पपल-लपव	पपल-लपव	पपल्ल-ल्लपव	"धपवपध"
पपग! पवग?	पपरु! पवरु?	पपरु! पवरु?	पपळ-ळपव	पपल-लपव	पपल्ल-ल्लपव	"नपवपन"
पपज! पवज?	पपह! पवह?	पपरु! पवरु?	पपव-वपव		पपल्ल-ल्लपव	"पपवपप"
पपङ्ग! पवङ्ग?	पपळ! पवळ?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्ग-ङ्गपव		"फपवपफ"
पपढ! पवढ?		पपदू! पवदू?	पपष-षपव	पपछ-छपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपक्र! पवक्र?	पपक्त! पवक्त?	पपदू! पवदू?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहु-हुपव	"भपवपभ"
पपय! पवय?	पपरु! पवरु?	पपदू! पवदू?	पपह-हपव	पपट्र-ट्रपव	पपह-हपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपरु! पवरु?	-	पपक्र-क्रपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपह-हपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्र! पवट्र?	पपक-कपव	पपख-खपव	पपद्ग-द्गपव	पपहु-हुपव	"रपवपर"
	पपट्र! पवट्र?	पपख-खपव	पपग-गपव	पपट्र-ट्रपव	पपहु-हुपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठु! पवठु?	पपग-गपव	पपज-जपव	पपरु-रुपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपओ! पवओ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपघ-घपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपह-हपव	पपरु-रुपव	"वपवपव"
पपओ! पवओ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपङ-ङपव	पपढ-ढपव	पपळ-ळपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपच-चपव	पपक्र-क्रपव		पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपछ-छपव	पपय-यपव	पपक्त-क्तपव	पपदू-दूपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपट्र! पवट्र?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपरु-रुपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपट्र! पवट्र?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपरु-रुपव	-	"क्रपवपक्र"
पपए! पवए?	पपट्र! पवट्र?	पपञ-ञपव		पपट्र-ट्रपव	"कपवपक"	"खपवपख"
पपऐ! पवऐ?	पपट्र! पवट्र?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्र-ट्रपव	"खपवपख"	"गपवपग"
पपऐ! पवऐ?	पपट्र! पवट्र?	पपठ-ठपव	पपओ-ओपव	पपठ-ठपव	"गपवपग"	"जपवपज"
पपऐ! पवऐ?	पपट्र! पवट्र?	पपड-डपव	पपओ-ओपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"घपवपघ"	"ङपवपङ्ग"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"डपवपड"	"ढपवपढ"
पपओ! पवओ?	पपभ-भपव	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"चपवपच"	"क्रपवपक्र"
पपओ! पवओ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"छपवपछ"	"यपवपय"
पपक्र! पवक्र?	पपल्ज! पवल्लज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपक्र! पवक्र?	पपल्ल! पवल्ल?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपल! पवल?	पपल्ल! पवल्ल?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ञपवपञ"	
पपल! पवल?	पपल्ल! पवल्ल?	पपन-नपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपल्ल! पवल्ल?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ठपवपठ"	"ओपवपओ"

"अपवपअ"	"हुपवपहु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपहिपपहिंपपहिंपप
"इपवपइ"	"हूपवपहू"			पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप
"ईपवपई"	"द्धपवपद्ध"	पवप २१०१ वपव	पपकिपपकिंपपकिंपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपज्ञिंपप
"उपवपउ"	"द्रपवपद्र"	पवप २२०१ वपव	पपखिपपखिंपपखिंपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप २३०१ वपव	पपगिपपगिंपपगिंपप	
"एपवपए"	"द्वपवपद्व"	पवप २४०१ वपव	पपघिपपघिंपपघिंपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप २५०१ वपव	पपङिपपङिंपपङिंपप	
"ऎपवपऎवव"	"द्धपवपद्ध"	पवप २६०१ वपव	पपचिपपचिंपपचिंपप	
"ऎपवपऎ"	"द्वपवपद्व"	पवप २७०१ वपव	पपछिपपछिंपपछिंपप	
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप २८०१ वपव	पपजिपपजिंपपजिंपप	
"ओपवपओ"	"भपवपभ"	पवप २९०१ वपव	पपझिपपझिंपपझिंपप	
"औपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"		पपञिपपञिंपपञिंपप	
"ऋपवपऋ"	"ल्जपवपल्ज"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपटिंपप	
"ॠपवपॠ"	"ह्लपवपह्ल"	००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपठिंपप	
"लृपवपलृ"	"ह्लपवपह्ल"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपडिंपप	
"लृपवपलृ"	"ह्लपवपह्ल"	००३,०१०,३११	पपढिपपढिंपपढिंपप	
	"ह्लपवपह्ल"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपणिंपप	
"झपवपझ"		००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपतिंपप	
"छपवपछ"	"हुपवपहु"	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपथिंपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपदिंपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपधिंपप	
"ड्रपवपड्र"	"हूपवपहू"	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपनिंपप	
"द्वपवपद्व"	"हुपवपहु"		पपपिपपपिंपपपिंपप	
"द्रपवपद्र"	"हूपवपहू"	०००.०१०.०११	पपफिपपफिंपपफिंपप	
"रूपवपरू"	"रूपवपरू"	००१.०१०.१११	पपबिपपबिंपपबिंपप	
"हपवपह"	"रूपवपरू"	००२.०१०.२११	पपभिपपभिंपपभिंपप	
"ळपवपळ"	"दुपवपदु"	००३.०१०.३११	पपमिपपमिंपपमिंपप	
	"दूपवपदू"	००४.०१०.४११	पपयिपपयिंपपयिंपप	
	"दूपवपदू"	००५.०१०.५११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	००६.०१०.६११	पपलिपपलिंपपलिंपप	
"रूपवपरू"		००७.०१०.७११	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"रूपवपरू"		००८.०१०.८११	पपविपपविंपपविंपप	
"टृपवपटृ"		००९.०१०.९११	पपशिपपशिंपपशिंपप	
"टृपवपटृ"			पपषिपपषिंपपषिंपप	
"ठुपवपठु"			पपसिपपसिंपपसिंपप	
"डूपवपडू"				

pg 12/18

pg 13/18

पपचकपपचखपपचापपचयपपचहःपपच्यप
पछपपपचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडप
पचढपपचणपपचत्तपपचथपपचदपपचधपपचनप
पचन्पपचमपपचफपपचबपपचभपपचमपपचयप
पघ्नपपचरपपचल्पपचळपपचळपपचवप
पचशपपचषपपचसपपचहपपचक्कपपचखपपचाप
पचजपपचहपपचडपपचफपपच्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप
पइत्तपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप
पइरपपइरूपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप
पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप
पइङपपइढपपइफपपइयपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
 पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्जपपङ्त्पपङ्ठपपङ्ठुप
 पङ्ठुपपङ्णपपङ्त्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप
 पङ्नपपङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यप
 पङ्गपपङ्ङपपङ्ळपपङ्ळपपङ्ळपपङ्शप
 पङ्षपपङ्सपपङ्हपपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्जप
 पङ्ङपपङ्ठपपङ्ठुपपङ्णप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप
पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप
पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप
पढ्न्पपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्म्यप
पढ्ऋपपढ्ऌपपढ्ळपपढ्ळपपढ्ळपपढ्वपपढ्शप
पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्क्पपढ्खपपढ्गपपढ्जप
पढ्ङपपढ्ढपपढ्फपपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डःपपण्चप
पण्छपपण्जपपण्झपपण्जपपण्टपपण्ठपपण्डप
पण्डपपण्णपपण्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप
पण्नपपण्पपपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्यप
पण्रपपण्ऋपपण्लपपण्ळपपण्ळपपण्वपपण्शप
पण्षपपण्सपपण्हपपण्क्कपपण्खपपण्गपपण्जप
पण्डपपण्ढपपण्क्कपपण्यपप

[illegible]

पपथ्कपपथ्खपपथापपथ्घपपथ्ङपपथ्चपपथ्छप
 पथ्जपपथ्झपपथ्झपपथ्टपपथ्ठपपथ्डपपथ्ढप
 पथ्णपपथ्त्तपपथ्थपपथ्दपपथ्थपपथ्नपपथ्त्तप
 पथ्पपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्यपपथ्भ्रप
 पथ्ऋपपथ्ल्लपपथ्ळपपथ्ळपपथ्त्वपपथ्शपपथ्षप
 पथ्सपपथ्हपपथ्क्कपपथ्खपपथापपथ्जपपथ्झप
 पथ्ढपपथ्फपपथ्पप

पपदृकपपदृखपपदृपपदृपपदृडपदृचप
पदृछपपदृजपपदृझपपदृञपपदृटपपदृठप
पदृडपपदृढपपदृणपपदृत्तपपदृथपपदृपपदृप
पदृन्पपदृत्तपपदृपपदृफपपदृपपदृपपदृप
पद्यपपदृपपदृरपपदृलपपदृळपपदृळपपदृप
पदृशपपदृषपपदृसपपदृहपपदृक्कपपदृखप
पदृगपपदृजपपदृडपपदृढपपदृफपपदृयपप

पपधकपपध्रुवपपधापपध्यपपद्धपपद्घ्यप
पध्ठपपधजपपधझापपधञपपटपपठपपडप
पढपपणपपप्तपपथपपदपपधपपध्नप
पध्नपपधमपपधक्कपपध्वपपभपपभमपपभ्यप
पभ्रपपभ्रूपपभ्लपपळपपळपपध्वपपश्चाप
पषपपष्पपध्हपपध्क्कपपध्रुवपपधापपधजप
पध्ठपपढपपधक्कपपध्यप

पपन्कपपन्खपपनापपन्धपपन्धपपन्धप
 पन्जपपन्झपपन्जपपन्तपपन्तपपन्तप
 पन्गपपन्तपपन्थपपन्धपपन्धपपन्तप
 पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्मपपन्त्रप
 पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सप
 पन्खपपन्नापपन्जपपन्डपपन्ढपपन्फ

[illegible]

पपक्कपपक्खपपणपपप्थपपङ्गपपच्चपपष्ठप
पप्जपपङ्गपपज्जपपटपपठपपडपपढपपणप
पत्तपपथपपद्धपपथपपन्नपपन्नपपप्पपपफ्फप
पच्चपपप्थपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पप
पप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पप
पप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पप
पप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पपपप्पप

पपफकपपफखपपफगपपफघपपफङपपफचप
पफछपपफजपपफझपपफञपपफटपपफठपपफडप
पफढपपफणपपफतपपफथपपफदपपफधपपफनप
पफन्पपफमपपफफपपफबपपफभपपफमपपफयप
पफ्रपपफरपपफल्पपफळपपफळपपफवपपफशप
पफषपपफसपपफहपपफकपपफखपपफगपपफजप
पफड़पपफढ़पपफरुपपफयपप

पपक्कपपखुपपबापपल्लपपळ्पपल्हपपळुप
पज्जपपझ्जपपञ्जपपट्टपपठ्ठपपड्डपपढ्ढपपण्णप
पत्तपपथ्थपपद्धपपथ्थिपपन्नपपन्नापपप्पपपफ्फप
पस्सपपस्मिपपम्मपपय्यपपभ्रपपब्बपपल्लपपल्लप
पळ्ळपपव्वपपष्शपपप्पपप्पपप्पपप्पपप्पपप्पपप्पप
पभापपब्बपपड्डपपड्डपपप्पपपय्यप

पपभ्रकपपभ्रखपपभापपभ्रघपपभ्रङपपभ्रचपपभ्रछप
पभ्रजपपभ्रझपपभ्रञपपभ्रटपपभ्रठपपभ्रडपपभ्रढप
पभ्रणपपभ्रतपपभ्रथपपभ्रदपपभ्रधपपभ्रनपपभ्रनप
पभ्रमपपभ्रफपपभ्रबपपभ्रभपपभ्रमपपभ्रयपपभ्रप्रप
पभ्ररपपभ्रलपपभ्रळपपभ्रळपपभ्रवपपभ्रशपपभ्रषप
पभ्रसपपभ्रहपपभ्रकपपभ्रखपपभ्रभापपभ्रजपपभ्रडप
पभ्रढपपभ्रफपपभ्रयपप

पपम्कपपम्खपपमापपम्यपपम्हपपम्यपपम्ठप
पम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डपपम्ढप
पम्णपपम्त्तपपम्यथपपम्दपपम्यथपपम्नपपम्त्तपपम्पप
पम्फपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्नपपम्पपपम्लप
पम्ळपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप
पम्क्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्ढपपम्फप
पम्यपप

less common half-forms

पपदकपपदखपपद्यापपद्यपपदहपपदचपपदछप
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप
पदफपपदबपपदभपपदमपप पपद्यपपदलप
पदळपपदमवपपदशपप पपदषपपदसपपदहपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्धछप
पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्धढप
पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धमप
पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप
पद्धळपपद्धमवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्धहपप

पपहकपपहखपपहगपपहघपपहङपपहचपपहछप
पहजपपहझपपहञपपहटपपहठपपहडपपहढप
पहणपपहतपपहथपपहदपपहधपपहनपपहमप
पहफपपहबपपहभपपहमपप पपहयपपहलप
पहळपपहमवपपहशपप पपहषपपहसपपहहपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप
पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप
पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप
पक्रथपपक्रनपपक्रमपपक्रमपपक्रमपपक्रमप
पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रमपवपपक्रशप
पपक्रमपपक्रमपपक्रमपप

पपरक्कपपरखपपरगपपरघपपरङपपरचप
परछपपरजपपरझपपरञपपरटपपरठप
परडपपरढपपरणपपरतपपरथपपरदपपरधप
परनपपरमपपरफपपरबपपरभपपरमप
परयपपरलपपरळपपरमवपपरशप
परषपपरसपपरहपप

पपगकपपगखपपगापपगघपपगङपपगचपपगछप
पगजपपगझपपगञपपगटपपगठपपगडपपगढप
पगणपपगतपपगथपपगदपपगधपपगनपपगमप
पगफपपगबपपगभपपगमपप पपगयपपगलपपगळप
पगमवपपगशपप पपगषपपगसपपगहपप

पपघकपपघखपपघगपपघघपपघङपपघचपपघछप
पघजपपघझपपघञपपघटपपघठपपघडपपघढप
पघणपपघतपपघथपपघदपपघधपपघनपपघमप
पघफपपघबपपघभपपघमपप पपघयपपघलपपघळप
पघमवपपघशपप पपघषपपघसपपघहपप

पपचकपपचखपपचापपचघपपचङपपचचपपचछप
पचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडपपचढप
पचणपपचतपपचथपपचदपपचधपपचनपपचमप
पचफपपचबपपचभपपचमपपचयपपचलपपचळप
पचमवपपचशपप पचषपपचसपपचहपप

पपजकपपजखपपजापपजघपपजङपपजचपपजछप
पजजपपजझपपजञपपजटपपजठपपजडपपजढप
पजापपजतपपजथपपजदपपजधपपजनपपजमप
पजफपपजबपपजभपपजमपपजयपपजलप
पजळपपजमवपपजशपप पजषपपजसपपजहपप

पपझकपपझखपपझगपपझघपपझङपपझचप
पझछपपझजपपझझपपझञपपझटपपझठपपझडप
पझढपपझणपपझतपपझथपपझदपपझधपपझनप
पझमपपझफपपझबपपझभपपझमपप पपझयप
पझलपपझळपपझमवपपझशपपपझषपपझसप
पझहपप

पपडकपपडखपपडापपडघपपडङपपडचप
पडछपपडजपपडझपपडञपपडटपपडठप
पडडपपडढपपडापपडतपपडथपपडदपपडधप
पडनपपडमपपडफपपडबपपडभपपडमपप पपडयप
पडलपपडळपपडमवपपडशपप पडषपपडसप
पडहपप

पपणकपपणखपपणापपणघपपणङपपणचपपणछप
पणजपपणझपपणञपपणटपपणठपपणडपपणढप
पणणपपणतपपणथपपणदपपणधपपणनपपणमप
पणफपपणबपपणभपपणमपप पपणयपपणलप
पणळपपणमवपपणशपप पपणषपपणसपपणहपप

पपत्तकपपत्तखपपत्तापपत्तघपपत्तङपपत्तचपपत्तछप
पत्तजपपत्तझपपत्तञपपत्तटपपत्तठपपत्तडपपत्तढप
पत्तणपपत्ततपपत्तथपपत्तदपपत्तधपपत्तनपपत्तमप
पत्तफपपत्तबपपत्तभपपत्तमपप पपत्तयपपत्तलप
पत्तळपपत्तमवपपत्तशपप पपत्तषपपत्तसपपत्तहपप

पपथकपपथखपपथापपथघपपथङपपथचपपथछप
पथजपपथझपपथञपपथटपपथठपपथडपपथढप
पथणपपथतपपथथपपथदपपथधपपथनपपथमप
पथफपपथबपपथभपपथमपप पपथयपपथलप
पथळपपथमवपपथशपप पपथषपपथसपपथहपप

पपधकपपधखपपधापपधघपपधङपपधचपपधछप
पधजपपधझपपधञपपधटपपधठपपधडपपधढप
पधणपपधतपपधथपपधदपपधधपपधनपपधमप
पधफपपधबपपधभपपधमपप पपधयपपधलप
पधळपपधमवपपधशपप पपधषपपधसपपधहपप

पपनकपपनखपपनापपनघपपनङपपनचपपनछप
पनजपपनझपपनञपपनटपपनठपपनडपपनढप
पनापपनतपपनथपपनदपपनधपपननपपनमप
पनफपपनबपपनभपपनमपप पपनयपपनलप
पनळपपनमवपपनशपप पपनषपपनसपपनहपप

पपमकपपमखपपमापपमघपपमङपपमचपपमछप
पमजपपमझपपमञपपमटपपमठपपमडपपमढप
पमतपपमथपपमदपपमधपपमनपपममपपमफप
पमभपपममपप पपमयपपमलपपमळपपममवप
पमशपप पमषपपमसपपमहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रापपप्रघपपप्रडपपप्रचप
पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप
पप्रडपपप्रढपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप
पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप
पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रवपपप्रशपप
पपप्रषपपप्रसपपप्रहपप

पपष्कपपपखपपप्रापपप्रघपपप्रडपपप्रचपपप्रछप
पप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठपपप्रडपपप्रढप
पप्रापपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधपपप्रनपपप्रमपपप्रकप
पप्रभपपप्रभपपप्रमपप पप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रव
पपप्रशपप पप्रषपपप्रसपपप्रहपप